(४) सुनो जी ने माँ ने...

सुनोजी...
माँ ने देखे सोलह सपने, जाने उनका फल क्या होगा ॥ टेक ॥

प्रथम सुगज ऐरावत देख्यो, मेघ समान सु-गरज घने,
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कन्धा शब्द भने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 1 ॥

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कन्धे लाल सुवर्ण बने,
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 2 ॥

पाँचे फूलमाल-द्वय गुञ्जित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने,
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥ 3 ॥

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने,

अष्टम मीन-युगल सर रमते देखे चञ्चल भाव जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥ 4॥

सुवर्ण कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढ़कत घने,
दसमें हँस रमण करते सर, कमल गन्ध युत लहर ठने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥ 5॥

सागर दर्पण-सम निर्मल लख, लसत तरङ्गनि हँसत घने,
बारम सिंहासन सुवर्णमय सिंहपीठ मणि जड़ित बने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥ 6॥

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सर अनुराग घने,
चौदस नाग-भवन भू उठता, देखी कान्ति अपार जने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥ 7॥

पन्द्रम रत्न-राशि युति पूरण, दुःख-दरिद्र संहार हनै,
धूम रहित शुभ पावक देखी, कर्मकाष्ठ जल जात घने;
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने;
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को सुनोजी॥ 8॥